ब्राक मीडिया

डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय के मीडिया छात्रों का प्रायोगिक समाचार-पत्र

ब्राक मीडिया के निरंतर एक वर्ष प्रकाशित होने की बधाई। 27 अक्टूबर 2023 को कई साल बाद पहला संस्करण प्रकाशित हुआ। शिक्षकों के मार्गदर्शन का, सभी सहयोगी विद्यार्थियों का और विशेष रूप से पाठकों का हृदय से आभार।

नई दिल्ली, 19 मार्च 2025 | अंक 8 , पृष्ठ 1

चल वैजयंती अंतर महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता में श्री वेंकटेश्वर कॉलेज ने मारी बाजी

डॉ भीमराव अंबेडकर कॉलेज की 'संवाद' वाद विवाद समिति ने मीडिया प्रोपोगेंडा का पर्याय है विषय पर चल वैजयन्ती अंतरमहाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 23 महाविद्यालयों के कुल 46 प्रतिभागियों ने पक्ष और विपक्ष में विषय पर विचार रखे। समिति द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम में कॉलेज प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद के साथ निर्णायक मंडल में आईआईए-मसी के प्रो .प्रमोद कुमार, आजतक के टीवी पत्रकार मो. इमरान खान और प्रो. राजेश उपाध्याय भी उपस्थित रहे।

चल वैजयंती वाद-विवाद प्रतियोगिता में बतौर अतिथि शिरकत करते प्राचार्य और अन्य गणमान्य

चल वैजयन्ती प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री वेंकटेश्वर कॉलेज की तनुश्री जोशी और शांभवी ने जीता। द्वितीय पुरस्कार रामजस कॉलेज के श्वेतांक और खुशबू और तृतीय पुरस्कार शहिद भगत सिंह कॉलेज के आदित्य शर्मा और रौनक दीक्षित ने प्राप्त किया। कॉलेज प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद, संवाद समिति संयोजक प्रो. बिजेंद्र कुमार और अतिथियों ने चल वैजयन्ती ट्रॉफी विजेताओं को प्रदान किया।

संवाद वाद विवाद समिति की सहसंयोजिका दिलजीत कौर ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि जबसे इस कॉलेज की स्थापना हुई है, तब से यह वाद विवाद प्रतियोगिता चली आ रही है और यह दिल्ली विश्वविद्यालय में काफी प्रतिष्ठित वाद विवाद प्रतियोगिता है।

कॉलेज प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि वाद -विवाद का मंच विद्यार्थियों को अपनी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है। संवाद वाद - विवाद समिति के संयोजक प्रो. बिजेंद्र कुमार ने कहा कि यह प्रतियोगिता सिर्फ ट्रॉफी जीतने तक ही सीमित नहीं है। अगर आप प्रतिभागियों को ध्यानपूर्वक सुनते भी हैं तो निश्चित ही आप यहां से कुछ सीख कर जाएंगे।

प्रो. प्रमोद कुमार ने कहा कि कुछ युवा वक्ताओं में काफी ऊर्जा दिखी। आपने मीडिया के इतिहास और उससे भी पीछे की बात की। एक वर्ग है जो मीडिया को प्रोपोगेंडा के तौर पर देखता है। वहीं दूसरा इसको ऐसा नहीं मानता।

प्रतियोगिता की शुरुआत अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीपार्जन के साथ हुई। अतिथियों का स्वागत पौध देकर किया गया। प्रथम सत्र का मंच संचालन दिव्यांश गांधी और करुणा नयन ने किया। वहीं दूसरे सत्र का मंच संचालन डॉ. विनीत कुमार ने किया। इस अवसर पर प्रो. बिजेंद्र कुमार प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी, प्रो. राजेश उपाध्याय, प्रो. सुनीता मलिक, अर्चना माथुर , डॉ. नेहा शर्मा ,डॉ. विनीत कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. प्रवीण झा, डॉ. सुभाष गौतम, डॉ. रंजीत कुमार, अंशुमन कुमार के साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

नेटवर्किंग और संपर्क से खुलेंगे रोजगार के अवसर : राजेन्द्र गुसाईं

डॉ भीमराव अंबेडकर कॉलेज के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम द्वारा खेल पत्रकारिता विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान को खेल पत्रकार राजेन्द्र गुसाईं ने संबोधित किया। अतिथि का स्वागत प्रो. बिजेंद्र कुमार ने पौधा देकर किया।

राजेन्द्र गुसाईं ने खेल पत्रकारिता के महत्व और कौशल की भी जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि खेल पत्रकार को तकनीकी ज्ञान और खेल के नियम संबंधी समझ होनी चाहिए। इसके साथ ही नेटवर्किंग और संपर्क कैसे मजबूत करें इस बारे में भी बताया। वर्तमान समय में ईस्पोर्ट खेल की दुनिया में ज्यादा चर्चा में है। इसलिए जिन्हें भी ईस्पोर्ट्स में रुचि है, उनके लिए इस क्षेत्र में रोजगार के ज्यादा मौके हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर स्पोर्ट्स सम्बन्धी खबरों की उपलब्ध सामग्री पर बात की। उन्होंने कहा कि खेल की दुनिया में

खेल पत्रकार राजेन्द्र गुसाईं

होने वाले भ्रष्टाचार की ख़बर लिखते समय सावधानी रखनी चाहिए। खेल की दुनिया में खिलाड़ियों की निजी जिंदगी से सम्बंधित खबरें बहुत सोच समझ कर देनी चाहिए। कई बार हम मीडिया ट्रोल के कारण लोगो की जिंदगी भी बर्बाद होते भी देखा है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि किसी भी खिलाड़ी की निजी जानकारी को साझा करते समय उस खबर की पुष्टि कर लेनी चाहिए।

पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने के लिए हो नई तकनीक का इस्तेमाल : डॉ. दिलीप कुमार

डॉ भीमराव अंबेडकर कॉलेज में जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए 'न्यू मीडिया: संभावनायें व चुनौतियां' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस विशेष व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय जनसंचार संस्थान, जम्मू के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. दिलीप कुमार उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद के स्वागत वक्तव्य के साथ हुआ।

डॉ. दिलीप कुमार ने अपने विशेष व्याख्यान में न्यू मीडिया में अवसर और चुनातियों को रोजगार से जोड़ा। उन्होंने बताया कि किस प्रकार नई तकनीक के दौर में हमारे समक्ष रोजगार के नए नए अवसर भी उपलब्ध है और साथ ही यह भी बताया कि वर्तमान समय में नए माध्यम ने किस प्रकार रील और वीडियो के द्वारा पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों को प्रभावित किया है।

भारतीय जनसंचार संस्थान, जम्मू के निदेशक को सम्मानित करते प्राचार्य

विशेष व्याख्यान से पूर्व अतिथि का स्वागत पौध देकर किया गया। इस विशेष व्याख्यान का आयोजन विभाग के प्रो. बिजेंद्र कुमार और डॉ. प्रवीण कुमार झा ने किया। मंच संचालन द्वितीय वर्ष के छात्र सक्षम पांडेय और प्रेम कुमार ने किया। इस अवसर पर डॉ राकेश कुमार, डॉ सुभाष गौतम, डॉ रंजीत कुमार, अंशुमन कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को लेकर पहला मनोविज्ञान उत्सव का हुआ आयोजन

डॉ. भीम राव अंबेडकर कॉलेज में मनोविज्ञान विभाग ने 4 और 5 मार्च को अपना पहला मनोविज्ञान उत्सव आयोजित किया, जिसमें छात्रों, शिक्षकों और मनोविज्ञान के प्रति उत्साही लोगों को मानसिक स्वास्थ्य, रचनात्मकता और शैक्षणिक आदान-प्रदान के एक गतिशील उत्सव के लिए एक साथ लाया गया। इस कार्यक्रम में प्रेरक अतिथि वक्ता शामिल थे, जिनमें डॉ. इतिशा नागर शामिल थीं, जिन्होंने शरीर की सकारात्मकता और मनोविज्ञान में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व पर चर्चा की, और डॉ. मालवोहरा खन्ना, जिन्होंने इस क्षेत्र में सहानुभूति और स्वीकृति के महत्व पर प्रकाश डाला। सुखमंच द्वारा एक विचारोत्तेजक नाटक ने मानसिक स्वास्थ्य संघर्षों के बारे में जागरूकता बढ़ाई, जबकि ट्रेजर हंट और मेम प्रतियोगिता जैसी आकर्षक प्रतियोगिताओं ने छात्र-छात्राओं को रचनात्मक तरीकों से मनोवैज्ञानिक विषयों का पता लगाने का मौका दिया।

डॉ. ज्योत्सना रामचंद्रन के नेतृत्व में नृत्य और मूवमेंट थेरेपी सत्र जैसी कार्यशालाओं ने चिकित्सीय अनुभव

शिक्षक गण और स्वयंसेवक विद्यार्थियों का ग्रुप फोटो

प्रदान किए, जबकि फ्रायडियन क्लिक्स फोटोग्राफी प्रतियोगिता और शतरंज और क्विज़ प्रतियोगिताओं ने प्रतिभागियों की बुद्धि और रचनात्मकता का परीक्षण किया।

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने वाले स्टॉल, जिनमें यूथ फॉर मेंटल हेल्थ फाउंडेशन और इमो एड शामिल हैं, ने बिंगो और पॉजिटिव अफर्मेशन जैसी इंटरैक्टिव गतिविधियाँ प्रदान कीं, जबकि खाद्य स्टॉल और रचनात्मक प्रतिष्ठानों ने उत्सव के माहौल को और भी बेहतर बना दिया।

कार्यक्रम का समापन एक जीवंत समापन समारोह के साथ हुआ, जहाँ विजेताओं का सम्मान किया गया और आयोजकों ने मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। मनोविज्ञान उत्सव एक शानदार सफलता थी, जिसने सीखने, रचनात्मकता और सामुदायिक जुड़ाव के लिए एक मंच प्रदान किया।

अंबेडकर कॉलेज में प्रतिभा, उद्यम और कौशल का समागम

डॉ. भीम राव अंबेडकर कॉलेज की उद्यमिता प्रकोष्ठ ने प्रमुख वार्षिक फ्लैगशिप इवेंट "हेडवेबिज 5.0" का आयोजन किया। कार्यक्रम में 100 से अधिक छात्र, शिक्षक और प्रतिष्ठित अतिथि वक्ताओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विभिन्न प्रश्नों की श्रृंखला का आयोजन किया गया, जिसके बाद जजों के साथ एक स्पीकर सत्र आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रशंसा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता का निर्णय उद्योग जगत के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा किया गया, जिनमें श्री निखिल गौर, "हा-इवस्कूल" के संस्थापक और भारत के पहले सेल्स स्कूल और "टीनएज इंडिया" के सह-संस्थापक, श्री कमल छाबड़ा के सी ग्लोबएड के संस्थापक और सीईओ तथा ईवाई में वरिष्ठ प्रबंधक उपस्थित हुए। कार्यक्रम में कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद और प्रकोष्ठ संयोजक प्रो. संगीता शर्मा ने कार्यक्रम में अपने विचार साझा किए। ई-सेल के सदस्य डॉ. राजबाला गौतम, डॉ. अनुराधा त्यागी और दिलजीत कौर भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। विजेता टीम "टीम

कार्यक्रम का पोस्टर

डीसीएसी और टीम वीआईपीएस" को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। वहीं, उपविजेता के रूप में श्याम लाल कॉलेज (एसएलसी) की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और दूसरा स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

नेटवर्किंग और समुदाय निर्माण पर राष्ट्रीय सेमिनार हुआ संपन्न

डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज के सामाजिक कार्य विभाग एवं संकल्प क्लब के संयुक्त तत्वावधान में फेलिसिटी इंटरफेस नेटवर्किंग और समुदाय निर्माण विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में कॉलेज प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद उपस्थित रहे।

प्रो सदानंद प्रसाद ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्वयंसेवी संगठनों के साथ काम कर हमारे विद्यार्थी भविष्य में रोजगार के अवसर पा सकेंगे। वर्तमान दौर में स्वयंसेवी संस्थाएं रोजगार सृजन के अच्छे स्रोत बन कर उभर रहे हैं। सरकार के साथ भागीदारी कर के संस्थाएं सामुदायिक योजनाओं को समुदाय तक पहुंचाकर समुदाय निर्माग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ जुड़कर रोजगार के साथ देश निर्माण में भागीदार बने।

महाविद्यालय परिसर में स्वयंसेवी संस्थानों द्वारा कई तरह की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। साथ ही, स्टॉल लगाकर कई सामाजिक व स्वास्थ्य संबंधी जा-

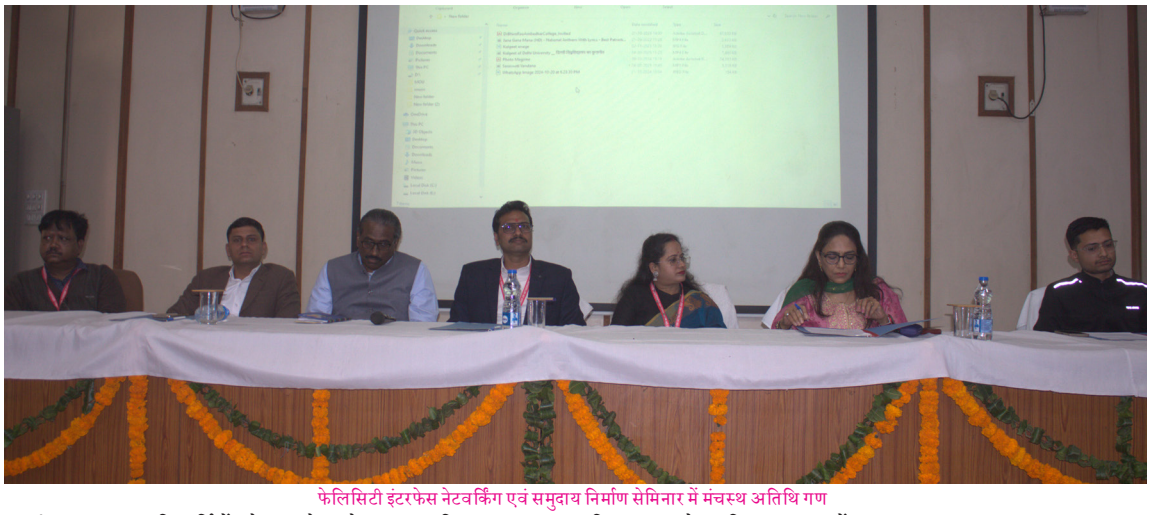

फेलिसिटी इंटरफेस नेटवर्किंग एवं समुदाय निर्माण सेमिनार में मंचस्थ अतिथि गण

नकारियां प्रदान कर विद्यार्थियों को जागरुक किया गया। एचआइवी के संक्रमण एवं एट्स के रोकथाम और उपचार संबंधी जानकारियां प्रदान करने के लिए स्टॉल लगाया गया था जो विद्यार्थियों के बीच अकर्षण का केन्द्र रहा। सेमिनार के दौरान स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। इन्होंने गीत-संगीत एवं नृत्य से सभी को झूमने पर मजबूर किया

सामाजिक कार्य विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में थर्ड जेंडर के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया और अपने कला कौशल का प्रदर्शन किया। छात्राओं के लिए मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसमें छात्राओं ने मेहदी रचने के कला कौशल का जबरदस्त प्रदर्शन किया। कॉलेज के खेल मैदान में दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के दीपार्चन के साथ हुई। सभागार में सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार करने के लिए मंत्र का जाप किया गया। इस सेमिनार में पच्चीस से ज्यादा स्वयंसेवी संगठनों से प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को प्राचार्य द्वारा पुरस्कृत किया गया विद्यार्थियों के योग कलाओं के प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर प्रो. अवतार सिंह, प्रो. ऋचा चौधरी, प्रो. तुष्टि भारद्वाज, डॉ. सुकृति चौधरी, डॉ. दीपशिखा चौधरी, डॉ. अंजली सुमन, श्री कुमार सत्यम, डॉ. किसलय कुमार सिंह के समेत महाविद्यालय के विद्यार्थी मौजूद रहे।

विश्वसनीयता का संकट और डिजिटल युग की चुनौतियों पर प्रो. के.जी. सुरेश से खास बातचीत

माखनलाल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) के. जी. सुरेश का इंटरव्यू करते हुए गोविंद राज

मीडिया में दशकों का अनुभव और इसके बाद अकादमिक जगत में कुलपति तक का सफर तय करने वाले व्यक्तित्वों में शुमार माखनलाल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. (डॉ.) के जी सुरेश से मीडिया के तमाम पक्षों पर हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के विद्यार्थी गोविंद राज ने लंबी बातचीत की है।

Govind:आज के दौर में लोगों का मुख्यधारा की मीडिया पर विश्वास घटता जा रहा है। ऐसी धारणा बन गई है कि मीडिया पक्षपातपूर्ण हो गई है और सत्य के बजाय एजेंडा आधारित समाचार प्रस्तुत करती है। इसी कारण लोग यूट्यूब इन्फ्लुएंसर्स और स्वतंत्र कंटेंट क्रिएटर्स की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। आप इस बदलते रुझान और मीडिया की विश्वसनीयता के संकट को कैसे देखते हैं?

प्रो. डॉ. के.जी. सुरेश:मीडिया में पक्षपात तो हमेशा से रहा है, क्योंकि मीडिया काएक विचारधारा होता है। मीडिया के मालिकों की भी एक विचारधारा होती है, उनके मुनाफे का सवाल होता है। कॉरपोरेट हितों को ध्यान में रखा जाता है। पहले अखबारों में यह होता था कि फलां अखबार सत्ता के पक्ष में है, फलां अखबार विपक्ष में। यह तो हमेशा रहा है। देखिए, निष्पक्षता हम सीखते तो हैं, लेकिन क्या सही और गलत का चयन मीडिया को नहीं करना चाहिए ? समझ लीजिए, एक बलात्कार की घटना होती है, उसमें आप निष्पक्ष कैसे रह सकते हैं? जो पीड़िता है, उसके पक्ष में तो आप खड़े होंगे ही। विचारों में पक्ष हो जाता है, समाचार में पक्ष नहीं होना चाहिए। एजेंडा सेटिंग तो हमेशा से रहा है।

अभी यूट्यूबर्स की ओर शिफ्टिंग का कारण यह है कि लोगों में ध्रुवीकरण साफ दिखाई दे रहा है। लोग जो सुनना चाहते हैं, वह आज कस्टमाइज़्ड कंटेंट के रूप में उपलब्ध है। आज विकल्प हैं। अगर मुझे लगता है कि ये सारे चैनल एक पक्ष को ले रहे हैं, तो मेरे पास यूट्यूब का माध्यम है, जहां मैं वैकल्पिक पक्ष को सुन सकता हूं। तो कहीं न कहीं कोई न कोई पक्ष ले ही रहा है। यह नहीं है कि कुछ निष्पक्ष हो रहा है। निष्पक्ष कुछ भी नहीं है।

सवाल विश्वसनीयता का है। इसके दो-तीन कारण हैं। पहला, बाज़ारवाद हावी है। टारगेट ऑडियंस क्या चाहती है, यह मैनेजर तय करते हैं। संपादक की भूमिका हाशिए पर चली गई है। विज्ञापन और बिजनेस वाले लोग चैनलों में तय करते हैं कि क्या करना है क्योंकि सारा राजस्व वहीं से प्राप्त होता है और मालिकों को व्यावसायिक लाभ भी अर्जित करना होता है। यदि जनसंचार के माध्यम विज्ञापनदाताओं और व्यावसायियों के हितों का पोषण नहीं कर पाएंगे ,तो मालिकों को होने वाला लाभ सकते में आ जाएगा। दूसरा, मालिक का अपना स्टैंड होता है। तीसरा, पहले समाज को नेतृत्व करने का काम मीडिया करता था, अब मीडिया पिछलग्गू की भूमिका में है। जनता जो चाहती है, हम वही परोस रहे हैं।

एक समाचार पत्र की ही बात करें। उसकी छपाई की लागत 20 रुपये है, लेकिन आपको मिलता है 4 या 5 रुपये में। यह 15 रुपये कहां से आता है? विज्ञापनदाता, प्रायोजक, स्पॉन्सरशिप से। अब वह 5 रुपये देने वाले की बात करेगा या 15 रुपये देने वाले की? हम लोग 500 रुपये का पॉपकॉर्न खा लेते हैं, लेकिन चैनल फ्री-टू-एयर चाहते हैं। हम चैनल के लिए पैसे देने को तैयार नहीं हैं। जब से यूट्यूब का सिस्टम आया, हमने एक इंटरनेट सब्सक्रिप्शन लिया और उससे सारे चैनल चला रहे हैं। चैनल को इससे क्या कमाई है? चैनल का खर्चा उतना ही है। उसे सैटेलाइट पर ले जाना है, प्रोडक्शन का कॉस्ट है, सब कुछ करना है। वह कहां से लाएगा? विज्ञापनदाताओं और स्पॉन्सर पर निर्भर है। आजकल बड़े-बड़े चैनल कहते हैं कि सिर्फ इवेंट से पैसे कमा रहे हैं। हर चैनल इवेंट करवाता है, मजबूरी है। सिर्फ सब्सक्रिप्शन से उसकी कमाई नहीं हो रही। जब तक सब्सक्राइबर आधारित कमाई—चाहे चैनल हो, अखबार हो या यूट्यूबर हो—नहीं होगी, तब तक निष्पक्षता या ऑब्जेक्टिविटी की कल्पना ही कर सकते हैं। इसलिए हमें स्वतंत्र सूचना चाहिए, तो उसकी कीमत भी अदा करनी चाहिए।

Govind Raj: सोशल मीडिया के प्रसार के साथ क्षेत्रीय स्तर पर यूट्यूब रिपोर्टिंग का क्रेज़ तेज़ी से बढ़ा है। कोई भी माइक और कैमरा लेकर रिपोर्टिंग करने लग जाता है, जिसके लिए किसी डिग्री या डिप्लोमा की ज़रूरत नहीं पड़ती। आप इस ट्रेंड को कैसे देखते हैं? क्या यह लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति है या पत्रकारिता के मानकों का ह्रास?

प्रो. डॉ. के.जी. सुरेश: लेकिन वे क्या पत्रकारिता कर रहे हैं? जब से पश्चिम में नागरिक पत्रकारिता की अवधारणा शुरू हुई कि कोई भी नागरिक पत्रकार बन सकता है, तो सवाल यह है—क्या कोई भी नागरिक इंजीनियर बन सकता है? कोई भी नागरिक डॉक्टर बन सकता है? कोई भी नागरिक CA बन सकता है? कोई भी नागरिक IAS हो सकता है? हो सकता है, लेकिन परीक्षा देनी पड़ेगी। उसी तरह नागरिक पत्रकारिता में "पत्रकार" शब्द से मुझे परहेज़ है। टेक्नोलॉजी आ गई है, तो आप नागरिक संचारक बन सकते हैं। नागरिक के नाते संचार माध्यमों का प्रयोग कर अपनी बात लोगों तक पहुंचा सकते हैं। जैसे ही आप इसे पत्रकारिता कहने लगते हैं, तो पत्रकारिता पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो जाता है। क्योंकि पत्रकारिता के लिए एक न्यूनतम क्वालिफिकेशन की आवश्यकता होती है।

पत्रकारिता में हम केवल टेक्नोलॉजी नहीं सिखाते कि आप कैमरा कैसे चलाते हैं। उसमें भारत के संविधान के बारे में बताया जाता है, मीडिया के नियमों और कानूनों के बारे में बताया जाता है, RTI के बारे में बताया जाता है, मीडिया से संबंधित सारे कानूनों के बारे में बताया जाता है। भारत के इतिहास, मीडिया के इतिहास, परंपराओं और कम्युनिकेशन थ्योरी के बारे में बताया जाता है। इसलिए मीडिया कर्मी को एक न्यूनतम ज्ञान आवश्यक है। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया भी इस पर विचार-विमर्श कर रही है। मुझे उम्मीद है कि यह अस्पष्टता दूर होनी चाहिए कि कोई ट्रेंड पत्रकार या कोई भी कैमरा लेकर पत्रकार बन जाए।

वैसे, अच्छी बात है। डिजिटल मीडिया के आने से मीडिया का लोकतंत्रीकरण हुआ। वे विषय या मुद्दे, जो पहले जन-जन तक नहीं पहुंचते थे, आज सामने आ रहे हैं। लेकिन साथ में बहुत सारा कूड़ा-करकट भी आ रहा है। मनमाने तरीके से रिपोर्टिंग, अवमानना जैसे नियमों का उल्लंघन हो रहा है। नफरत समाज में फैलाई जा रही है। भाईचारा खत्म किया जा रहा है। जातिगत और मजहबी आधार पर लोगों को बांटने का काम हो रहा है। कई असामाजिक और राष्ट्रविरोधी तत्व अपने-अलग-अलग नामों से हैंडल चला रहे हैं। हमने देखा कि जब किसान आंदोलन हुआ, तो पाकिस्तान से कई भारतीय नामों से हैंडल चल रहे थे। तो यह समस्या भी पैदा हो रही है।

Govind :आपको क्या लगता है, क्या डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के लिए भी कोई आचार संहिता या गाइडलाइंस बनाई जानी चाहिए?

प्रो. डॉ. के.जी. सुरेश: बिल्कुल। अभी जो रणवीर अलाहाबादिया वाला मामला आया, उसके बाद पार्लियामेंट्री कमिटी भी बैठी है। लेकिन मैं समझता हूं कि इसमें सिर्फ उस व्यक्ति को कठघरे में खड़ा करने तक सीमित नहीं होना चाहिए।

शेष पृष्ठ संख्या 4 पर>

पृष्ठ संख्या 3 का शेष>

आज गाली-गलौज बहुत साधारण चीज़ हो गई है। OTT प्लेटफॉर्म्स में भी गंदी-गंदी गालियां हैं। आप परिवार के साथ बैठकर शो नहीं देख सकते। तो ऐसे में मैं समझता हूं कि कहीं न कहीं यह एक सुनहरा अवसर मिला है, जिसमें नियमन लागू किया जा सकता है। उस दिशा में काम करना चाहिए। समाज इसके लिए तैयार है।

देखिए, सबसे मुश्किल बात यह है कि नियमन की बात होती है, तो उसे तुरंत नियंत्रण की तरह देखा जाता है। समाज में इसके प्रति आक्रोश पैदा होता है कि अरे, सरकार जो है! लेकिन कोई घटना हो, तो वह एक अवसर बन जाता है।

जिसमें आप तुरंत कार्रवाई कर सकते हैं। व्यापक चर्चा के बाद एक नियमावली लाने की ज़रूरत है, जो सर्वस्वीकार्य हो।

Govind: पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, जो हर वर्ग की आवाज़ उठाती है। लेकिन सबसे ज़्यादा किसी की आवाज़ दबी हुई है, तो वह पत्रकारों की ही है। न जॉब सिक्योरिटी है, न पर्याप्त वेतन, ऊपर से काम का लोड भी बहुत है। इस टॉक्सिक वर्क कल्चर, इनसिक्योरिटी और अस्थिरता के बारे में आप क्या कहेंगे?

प्रो. डॉ. के.जी. सुरेश: मुझे एक प्रकरण याद आया। शुरू-शुरू में मैंने एक छोटी पत्रिका में काम किया। यह आज की बात नहीं, बल्कि 1985 के की बात है। जिस पत्रिका में मैं काम करने गया, उन्होंने मेरे सारे प्रमाणपत्र और सर्टिफिकेट अपने पास रख लिए, ताकि मैं कहीं और अप्लाई न कर सकूं। तो मैंने उनसे पूछा कि क्या यह नैतिक रूप से गलत नहीं है, एक नौजवान के साथ? तो मालिक ने मुझे बताया, "बेटा, सवाल बाहर पूछने के लिए आपको पैसा दिया जाता है, घर के अंदर पूछने के लिए आपको पैसा नहीं दिया जाता।" यह तब की बात है। इसके बाद 40 साल हो गए। यह स्थिति तो हमेशा से रही है। अंदरखाने में मीडिया घरानों में यह हमेशा रहा ही है।

आज मीडिया में रोजगार की स्वतंत्रता है। अब एंटरप्रेन्योरशिप आ गई है मीडिया में। आप अपना यूट्यूब चैनल चला सकते हैं, अपनी पसंदीदा चीज़ें दिखा सकते हैं। डिजिटल मीडिया द्वारा प्रदान किये गये सारे विकल्पों का उपयोग करना चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य के संतुलन में हैप्पी केमिकल की अहम भूमिका

डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज की काउंसलिंग कमेटी ने आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में रजत जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया। विद्यार्थियों की समस्याओं को लेकर काउंसिलिंग करने वाली समिति के इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध मनोविश्लेषक प्रो. अरुणा ब्रूटा उपस्थित रहीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व कुलपति प्रो. पी. सी. पातंजलि और कॉलेज प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद भी उपस्थित रहे।

रजत जयंती कार्यक्रम के दौरान शिक्षक गण और विद्यार्थियों का ग्रुप फोटो

कॉलेज विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रो. अरुणा ब्रूटा ने कहा कि आज भी लोगों को मनोविकार और मनोविज्ञान के बीच का अंतर पता नहीं है। उन्होंने अपनी मनोवैज्ञानिक करियर की प्रेरणादायक यात्रा के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि मनोवैज्ञानिक प्राथमिक चिकित्सा (पीएफए) तनाव के लक्षणों को कम करने में काफी मददगार साबित होता है और व्यक्ति को आपदा एवं आघात से उभरने में सहायता करता है। हैप्पी केमिकल यानी सेरोटोनिन हार्मोन व्यक्ति के मानसिक संतुलन और खुशी को बढ़ाने में सहायक होता है। कार्यक्रम में वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक प्राथमिक चिकित्सा के महत्व पर चर्चा भी की गई।

प्रो. पी. सी. पातंजलि ने कहा कि संघर्ष से ही व्यक्ति अपनी मंजिल को प्राप्त करता है। काउंसलिंग कमेटी की संयोजिका अनीता श्रीवास्तव ने कमेटी की विकास यात्रा की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर कमेटी के प्रति समर्पित काउंसलर्स को उनके अतुलनीय योगदान के लिए अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। दिलजीत कौर ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि मानव स्वभाव को समझना मुश्किल काम है किन्तु समझना असंभव नहीं है। कार्यक्रम में सिमरित कौर, खुशबू, अदिति, अपर्णा और मोक्षिता को मनोविज्ञान में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। काउंसलिंग कमेटी की छात्र अध्यक्ष हर्षिता पुरोहित सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

कॉलेज छात्राओं ने सीखे आत्मरक्षा के दांव पेंच

भीमराव अंबेडकर कॉलेज की जेंडर सेंसेटाइजेशन कमेटी ने कॉलेज छात्राओं को आत्मरक्षा के गुण सिखाने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया । दिल्ली पुलिस की ट्रेनर ने कॉलेज परिसर में छात्राओं के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया। सीलमपुर पुलिस उपायुक्त कार्यालय की हेड कांस्टेबल योगेंद्री, अंशु और मंजू ने कॉलेज की छात्राओं को छेड़छाड़ से बचने और उसका मुंहतोड़ जवाब देने के तौर तरीके का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में छात्राओं ने आत्मरक्षा के गुण सीखने में दिलचस्पी दिखाई। आत्मरक्षा ट्रेनरों ने ट्रेनिंग कार्यक्रम के दौरान बताया कि कैसे हम शारीरिक और मानसिक रूप से आत्मरक्षा करने के लिए छोटी छोटी तरकीबें अपनाकर अपना बचाव कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यदि कोई क्राइम आपके साथ हो रहा है तो आप उत्तेजित ना हो बल्कि हिम्मत ओर समझदारी से काम लें और अपने नजदीकी पुलिस स्टेशन में उसकी शिकायत दर्ज करें। संकट की स्थिति में पैनिक होने के बजाय सूझबूझ से स्थिति से निपटने का प्रयास करें। अपना धैर्य और साहस बनाए रखें। हमलावर से लड़कर मानसिक तौर पर उनसे बचना चाहिए। उन्होंने बताया कि आप को अपने बैग और पेन जैसी छोटी चीज़ों को अपना हथियार बनाना चाहिए। उन्होंने कई ऐसे तरीके बताए कि शारीरिक और मानसिक तौर पर कैसे अपनी सुरक्षा की जाए। डॉ. मीतू दास ने बताया कि दुष्टों से ना ध्यान हटाइए बल्कि चौकन्ना रहें। कार्यक्रम की संयोजिका दीपाली जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि आगे भी ऐसी महिला सुरक्षा कार्यशाला आयोजित की जाएंगी। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए समय समय पर कदम उठाते रहने की सख्त आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि मुश्किल स्थिति में छात्राओं को पुलिस आपातकालीन सेवा नंबर 112 और हिम्मत प्लस एप की मदद लेनी चाहिए।

छात्राओं को आत्मरक्षा प्रशिक्षण देते हुए हेड कांस्टेबल अंशु और योगेंद्री

शिक्षक सहयोगी : प्रो. बिजेन्द्र कुमार , प्रो. शशि रानी, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. रंजीत कुमार, डॉ. सुभाष गौतम
डिज़ाइन परिकल्पना : योगेश, *प्रेम कुमार*
छात्र सहयोगी : *करुणा नयन चतुर्वेदी, अंशु कुमार, दिलीप, गणेश, नितिन, विशु, मानषी, गोविंद राज, सत्यम कुमार, आलोक सांडिल्य, सक्षम,*

डिस्क्लेमर: ब्राक मीडिया के इस प्रायोगिक समाचार-पत्र में छपी सामग्री लेखक के अपने विचार है, इस सामग्री का संपादकीय टीम से कोई संबंध नहीं है।